Post updated = Interpersonal Attraction and its determinants
(B.A 3rd Psychology. Hons. Paper-5)

Prepared By:
Dr. Gurdeep Kaur Athwal
Assit Prof
Dept of Psychology
B.N. College, T.M.B.U Bhagalpur
Email: gurdeepathwal18@gmail.com

Post updated - Function of Groups & structures.
(B.A 3rd Psychology Hons. Paper-5)

Prepared By
Dr. Gurdeep Kaur Athwal
Assit. Prof
Dept of Psychology
B.N. College. T.M.B.U Bhagalpur
Email: gurdeepathwal18@gmail.com

REDMI NOTE 8
48MP QUAD CAMERA

Q. अन्तर्वैयक्तिक आकर्षण से आप क्या समझते हैं? इसके निर्धारकों का वर्णन करें:-

Ans. अन्तर्वैयक्तिक आकर्षण समाज मनोवैज्ञानिकों के लिए Concept (संप्रत्यय) है। इस संप्रत्यय का मुख्य आकर्षण जिसका अंग्रेजी रूपान्तरण Attraction है। लैटिन के दो शब्दों Ad एवं Trahere से मिलकर बना है। Ad का मतलब को (To) तथा Trahere का मतलब खींचना (Topull) होता है। इस शाब्दिक अर्थ को देखते हुए दूसरे के प्रति खींचाव को आकर्षण कहा जाता है। परन्तु समाज मनोविज्ञान में आकर्षण का अर्थ पसंदगी (Liking) या नापसंदगी (Disliking) की एक मनोवृत्ति से है। Rathus 1988 के शब्दों में समाज मनोविज्ञान में आकर्षण को पसंदगी या ना पसंदगी की एक मनोवृत्ति के रूप में परिभाषित किया गया है। बेरॉन & बेरॉन 1997 ने इसकी सर्वोत्तम परिभाषा इस प्रकार दिया है। अंतर्वैयक्तिक आकर्षण से तात्पर्य दूसरों के प्रति हमारी मनोवृत्ति से होता है। इस तरह की मनोवृत्ति स्वीकारात्मक अस्वीकारात्मक निम्न जो घृणा से प्रेम तक प्रसारित होती है, में सुसज्जित होती है।

इन परिभाषाओं के विश्लेषण में कुछ महत्वपूर्ण तथ्यों का पता चलता है।

1. अंतर्वैयक्तिक आकर्षण :-

दूसरों के प्रति एक तरह की मनोवृत्ति है

इ. मनोवृत्ति के ही समान अंतर्वैयक्तिक आकर्षण स्वीकारात्मक तथा अस्वीकारात्मक कुछ भी हो सकता है। व्यक्ति जब किसी लक्षित व्यक्ति के प्रति आकृष्ट होता है तो इसका मतलब यह हुआ कि वह लक्षित व्यक्ति रखता है। और उसके प्रति प्रेम भाव दिखलाएगा। परन्तु व्यक्ति का किसी के साथ वैर विरोध हो जाता है और तब वह उसके प्रति अश्रद्धात्मक मनोवृत्ति विकसित कर लेता है।

:- अन्तर्वैयक्तिक आकर्षण के निर्धारक :-

समाज मनोवैज्ञानिको द्वारा अंतर्वैयक्तिक आकर्षण के मुख्य दो निर्धारक बताए है।

A. अंतर्वैयक्तिक निर्धारक :-

B. परिस्थिति जन्य निर्धारक :-

A. अंतर्वैयक्तिक निर्धारक :-

इस तरह के निर्धारक में इन कारकों को शामिल किया जाता है जो लक्षित व्यक्ति के व्यक्तिगत गुणों या विशेषताओं से संबंधित होते है। इन कारकों में प्रधान निम्नांकित है।

1. शारीरिक आकर्षकता :-

सुंदर रूप वाले व्यक्ति को देखते ही अधिकतर लोग उस व्यक्ति को अधिक समायोजित एवं सद्गुणों तथा प्रतिभा संपन्न मानने लगते है और उसके प्रति आकर्षित हो जाते है। इसे समाज मनोवैज्ञानिकों ने शारीरिक आकर्षकता कहा है। Kerr & Davis ने अपने अध्ययन में पाया कि अनाकर्षक स्त्रियो की तुलना में आकर्षक स्त्रियों के जीवन में प्रेम प्रसंग की चर्चा अधिक संख्या में होती है। अमरसन एंड ब्रॉस 1964 ने अपनी अध्ययन में पाया कि शारीरिक आकर्षकता का संबंध कुछ खास-खास चरों जैसे शैक्षिक उपलब्धि, आय, व्यवसायिक प्रतिष्ठा तथा मानसिक स्वास्थ्य के साथ धनात्मक होता है। ऑस्ट्रे के अध्ययन के अनुसार आकर्षक व्यक्तियों में आत्मसम्मान सामाजिक विश्वास अधिक होती है ऐसे व्यक्तियों को दूसरो से काफी सहयोग मिलता है फलस्वरूप वह किसी कार्य में अधिक सफल होते है।

2. समानता :-

दो व्यक्तियों में परस्पर आकर्षण एक मुख्य आधार कारण दोनों के बीच समानता होती है। समाजिक मनोवैज्ञानिको ने समानता के तीन विधाओं को महत्वपूर्ण बतलाया है।

i. मनोवृत्ति की समानता :-
ii. व्यक्तित्व की समानता :-
iii. व्यवहार गत समानता :-

i. मनोवृत्ति की समानता :-

कोई भी व्यक्ति उन व्यक्ति के प्रति अधिक आकर्षित होती है जिसकी मनोवृत्ति उसकी मनोवृत्ति के समान होती है। केटलन एंड एंडरसन 1963 ने अपने अध्ययन में पाया कि कॉलेज छात्रों में एक दूसरे के प्रति उस परिस्थिति में आकर्षकता बढ़ जाती है जब उनकी मनोवृत्ति किसी विषय या घटना के प्रति समान होती है।

ii. व्यक्तित्व की समानता :-

समाज मनोवैज्ञानिकों ने बतलाया कि अधिकांश लोग अपने व्यक्तित्व के समान शीलगुणों की ओर आकर्षित होते हैं। व्यक्तित्व गुणों से संबंधित एक महत्वपूर्ण बात यह है कि कुछ व्यक्तित्व शीलगुण सभी के लिए आकर्षक होते हैं। Palmer & Lyene ने अपने प्रयोग के आधार पर बताया कि प्रभावशील व्यक्ति के प्रति अन्य प्रभावशील व्यक्ति तो आकर्षित होते हैं परंतु दब्बू एवं प्रभावहीन व्यक्ति भी उनकी ओर आकर्षित होते हैं।

iii. व्यवहारगत समानता :- ~~किसी परिस्थिति में~~

किसी परिस्थिति में एक ही समान व्यवहार करने वाले व्यक्तियों में परस्पर आकर्षण अधिक पायी जाती है। अतः व्यक्ति आकर्षण का महत्वपूर्ण निर्धारक व्यवहारगत समानता है। कुछ समाज मनोवैज्ञानिकों के अनुसार चूंकि समानता सुखदायी होती है तथा इससे व्यक्तियों की इच्छाओं की संतुष्टि होती है इसलिए समानता से परस्पर आकर्षकता बढ़ती है।

2. पारस्परिकता :-

Byrne (बॉर्न) के अनुसार पारिस्परिकता एक अन्तर्वैयक्तिक आकर्षण का एक प्रमुख निर्धारक है। उनका कहना है कि एक तरफा आकर्षण बहुत दिनों तक नहीं चलता है आकर्षण को कायम रखने के लिए यह आवश्यक है कि वह पारिस्परिक एक दूसरे पर आकर्षित हो। दोनों में पारिस्परिक स्नेह का होना अनिवार्य है। हेमस 1984 के अध्ययन के अनुसार "जब दो व्यक्तियों के बीच में पारस्परिक आदर, स्नेह, अभिरुचि आदि की भावना होती है तो उनमें अंतर्वैयक्तिक आकर्षण बढ़ जाती है।

4. चाटुकारिता :-

अंतर्वैयक्तिक आकर्षण का एक निर्धारक चाटुकारिता भी है। किसी भी समाज में कुछ लोग चाटुकार, चापलूस और जी-हुजूरी करने वाला माना जाता है। ऐसे लोगों के प्रति लोग सहानुभूतिक मनोवृत्ति

REDMI NOTE 8
AI QUAD CAMERA

रखते है। परन्तु कुछ खास-खास परिस्थिति में इनकी चाटुकारिता आकर्षकता बढ़ जाती है। Walster & Festinger 1962 के अनुसार जो चाटुकारिता लक्षित व्यक्ति के पीठ (पीछे) में की जाती है वह सफल होती है। जॉन एंड जान के अनुसार एक अनुभवी चाटुकार लक्षित व्यक्ति के साथ समय-समय पर असहमति प्रगट करके अपने आप को बनाए रखने में समर्थ हो जाता है।

B. परिस्थिति जन्य निर्धारक :-

परिस्थिति जन्य निर्धारक में उन कारकों को रखा जाता है जिनका संबंध लक्षित व्यक्ति के गुणों से न होकर उन परिस्थितियों से होता है जिनमें लक्षित व्यक्ति के साथ अंत क्रियाएँ की जाती है। ये निम्नांकित है।

1. समीपता या सन्निकटता :-

अंतर्वैयक्तिक आकर्षण का एक प्रमुख निर्धारक समीपता है। अधिक अंतर्वैयक्तिक संबंधों की शुरुवात सन्निकटता से ही होती है जैसे किसी कार्यालय में साथ साथ काम करने वाले कर्मचारी किसी कक्षा में एक साथ बैठने वाले छात्र, छात्रावास में रहने वाले छात्र, एक दूसरे के प्रति चिन्तात्मक अभिवृत्तियों एवं भावनाएँ विकसित कर लेते है। जलस्वरूप इनमें अंतर्वैयक्तिक आकर्षण विकसित हो जाते है।

समाज मनोवैज्ञानिकों ने उन कारकों का भी अध्ययन किया है जिनसे यह पता चलता है कि समीपता से व्यक्तियों में अंतर्वैयक्तिक आकर्षण क्यों बढ़ जाती है। इसके दो कारण इन लोगों ने बतलाया है।

I. अन्तः क्रिया :-

II अनावरण :-

I. अन्तः क्रिया :-

जब दो या दो से अधिक व्यक्तियों के बीच स्थानिक समीपता होती है तो उनके आपस में अन्तः क्रिया करके एक दूसरे को समझने का मौका काफी मिलता है। इसका परिणाम यह होता है कि उनमें परस्पर आकर्षकता बढ़ जाती है। Newcomb ने अपने अध्ययन में पाया कि जब दो अपरिचित छात्रों का एक कमरे में रखकर उन्हें अन्तः क्रिया करने का मौका दिया तो उनमें मैत्री बढ़ जाती है तथा आकर्षकता तीव्र हो जाती है।

II अनावरण :-

समाज मनोवैज्ञानिकों का मानना है कि स्थानिक समीपता के कारण बार-बार व्यक्तियों में आमना-सामना होने से दूसरे के बारे में जानकारी प्राप्त होती है जो आगे चलकर आकर्षण को

आधार बनती है। Rayone के अनुसार जब व्यक्ति के सामने एक ही उद्दीपक को बार-बार रखा जाता है तो उस उद्दीपक के प्रति उनकी मनोवृत्ति अनुकूल हो जाती है।

2. संवेग उत्पन्न करने वाली घटनाएँ :-

समाज मनोवैज्ञानिकों का मत है कि यदि वातावरण की घटनाएँ ऐसी हैं जिनसे व्यक्ति में रचनात्मक भाव या संवेग उत्पन्न होती है, तो व्यक्ति में अन्तर्वैयक्तिक आकर्षण में वृद्धि हो जाती है। परन्तु यदि वातावरण की घटनाएँ व्यक्ति में दुःख का भाव या विषाद उत्पन्न करता है तो व्यक्ति में अन्तर्वैयक्तिक आकर्षण में कमी आ जाती है। Griffitt (त्रिपक्ष) 1970 ने अपने अध्ययन के आधार पर बतलाया कि रचनात्मक संवेग जैसे सुखद भाव आदि उत्पन्न होने पर एक व्यक्ति दूसरे व्यक्ति के प्रति आकर्षकता अधिक दिखलाता है।

इस तरह स्पष्ट हुआ है कि अन्तर्वैयक्तिक आकर्षण निर्धारण वैयक्तिक तथा परिस्थिति जन्य दोनों तरह के कारकों द्वारा होता है।

Q. समूह संरचना के कार्यों का वर्णन करें :-

Ans. समूह संरचना से यह पता चलता कि उनके सदस्यों के स्थान में पद एक दूसरे से किस प्रकार संबंधित है। समूह संरचना से समूह के उन गुणों का पता चलता है कि समूह का आकार कैसा है? समूह के सदस्यों की वास्तविक भूमिका कैसी है? सदस्यों के बीच आपस में किस प्रकार है। समूह के संरचना के ~~लिए~~ आवश्यक तत्व निम्नलिखित है :-

1. समूह का आकार :-

समूह के आकार से तात्पर्य समूह के सदस्यों की संख्या है। जब समूह में सदस्यों की संख्या कम होती है तो उसे लघु समूह कहते हैं जैसे- परिवार, जिसमें माता पिता के अलावे बच्चे, भाई-बहन आदि सम्मिलित होते हैं। जैसे-जैसे समूह में सदस्यों की संख्या बढ़ जाती है समूह का आकार बढ़ता जाता है। विद्यालय एवं राजनीतिपार्टी, बड़े समूह का उदाहरण है। समूह का आकार बाह्य एवं आंतरिक कारकों द्वारा निर्धारित होता है। उदाहरणस्वरूप परिवार का आकार, बाह्य काल जैसे नया बच्चा के जन्म लेने से बढ़ जाता है तथा किसी सदस्य की मृत्यु हो जाने से घट जाते है। उसी तरह से कुछ आंतरिक एवं मनोवैज्ञानिक कारक भी है जिनसे समूह का आकार प्रभावित होता है। जैसे समूह के सदस्यों में तनाव एवं मुखभेद हो जाने से कुछ सदस्य समूह छोड़कर अलग हो जाते हैं। राजनीति पार्टियों का आकार ऐसे कारकों से घटता बढ़ता रहता है।

रहता है।

2. समुह में व्यक्तिक भूमिकाएँ :-

प्रत्येक समुह में प्रत्येक सदस्य का एक निश्चित भूमिका होती है। जब व्यक्ति, किसी समुह का सदस्य बनता है तो वह किस तरह से दूसरे सदस्यों के साथ व्यवहार करेगा। यह उस समुह संरचना के स्वरूप एवं उसकी द्वारा की जाने वाली भूमिका पर निर्भर करता है। उदाहरण स्वरूप जब समुह की संरचना औपचारिक होती है तो सदस्यों की अन्त: क्रियाएँ एक निश्चित नियम द्वारा निर्देशित होती है। विश्वविद्यालय तथा सरकारी दफ्तर की सदस्यों की भूमिका इसके उदाहरण है। समुह की संरचना जब अनौपचारिक होती है तो उसके सदस्य एवं निश्चित नियम लागू नहीं होते है। जैसे परिवार एक अनौपचारिक समुह का उदाहरण है।

iii. समुह संबंध :-

समुह संबंध समुह संरचना का तीसरा प्रमुख तत्व है। समुह संबंध से तात्पर्य सदस्यों के बीच आपसी संबंध से होता है। समुह प्राय: कार्यात्मक रूप से छोटे-छोटे खण्डों में बटे होते है। ऐसे खण्डों को उपसमुह कहा जाता है। जैसे विश्वविद्यालय के सदस्यों के समुह को ही लें तो विश्वविद्यालय छोटे-छोटे समुह में बटे होते है। इन समुह में काफी समजातीय होती है। उप-समुह के सदस्यों के बीच का संबंध क्षैतीय तथा समतल दोनों होते है। जब दो उपसमुह के सदस्य समान स्तर एवं सत्ता के होते है तो उसके बीच का सदस्य समतल सदस्य होता है जैसे एक समुह का नेता दूसरे उपसमुह के नेता का संबंध समतल संबंध का उदाहरण है। खेल समुह में खिलाड़ियों के बीच का संबंध तथा गाउ-वहन के बीच का संबंध भी समतल संबंध का उदाहरण है। क्षैतीय संबंध में एक सदस्य दूसरे सदस्य से स्तर एवं सत्ता में ऊपर या नीचे होता है। जैसे विश्व विद्यालय में कुलपति एवं कुलसचिव का संबंध में क्षैतीय होते है।

iv संचार संरचना :-

समुह संरचना की एक प्रमुख विशेषता समुह के संचार का स्वरूप होता है। संचार से तात्पर्य समुह के सदस्यों को सुचना देने तथा प्राप्त करने की प्रक्रिया से होती है। यदि समुह का आकार काफी छोटा है तो सदस्यों में संचार प्रत्यक्ष होता है। परन्तु समुह का आकार काफी बड़ा है तो दो सदस्यों के बीच संचार का स्वरूप भी जटिल हो जाता है ऐसी परिस्थिति में एक सदस्य पदानुक्रम में अपने ठीक ऊपर या नीचे के सदस्य से प्रत्यक्ष रूप से संचार स्थापित कर पाता है परन्तु समुह के सदस्यों के साथ संचार केवल अन्य सदस्यों के माध्यम से ही कर पाता है अत: ऐसे समुह संरचना में संचार बाधित होते है। यह समुह संरचना की जटिलता का अंदाज हो जाता है।

* विभिन्न सामाजिक समूहों के बीच संबंध :-

किसी भी समाज में बहुत तरह के सामाजिक समूह होते हैं। किसी समूह विशेषकर बड़े समूह की संरचना को समझने के लिए विभिन्न तरीके हैं।

-: समूह के कार्य :-

समूह अपने सदस्यों के लिए अनेक कार्य करता है। समूह के कुछ सामान्य कार्य निम्न है।

I. आवश्यकताओं का विशेषीय संतुष्टि :-

अपने सदस्यों की आवश्यकताओं की संतुष्टि करना समूह का एक प्रमुख कार्य है। किसी भी समूह में दो प्रकार की सदस्य होती है प्रभावी एवं महत्वपूर्ण सदस्य तथा अप्रभावी एवं साधारण सदस्य। साधारण सदस्य उसी कोटी के होते हैं और सभी महत्वपूर्ण निर्णय इन्हीं लोगों के द्वारा लिये जाते हैं। उदाहरणार्थ विश्वविद्यालय में कुलपति एवं कुलसचिव प्रभावी सदस्य होते हैं। विश्वविद्यालय में शिक्षक लोग साधारण सदस्य के उदाहरण है। समूह प्रभावी सदस्यों एवं साधारण सदस्यों की जरूरी आवश्यकताओं जैसे भोजन, कपड़ा, मकान आदि की पूर्ति करने की कोशिश करता है।

II. अधिपत्य तथा तदीयत्व आवश्यकताओं की पूर्ति :-

समूह में सदस्यों की आधिपत्य एवं तदीयत्व आवश्यकताओं की संतुष्टि होती है। आधीपत्य आवश्यकता वैसी आवश्यकता है जिसमें व्यक्ति में समूह का एक महत्वपूर्ण सदस्य होने की भावना तीव्र होती है। समूह में व्यक्ति की आर्थिक आवश्यकताओं की ही संतुष्टि नहीं होती है बल्कि तदीयत्व आवश्यकताओं की भी संतुष्टि होती है। आधीपत्य आवश्यकता जब अधिक तीव्र होती है तब ऐसे व्यक्ति नेता बनते हैं। समूह तदीयत्व आवश्यकताओं की संतुष्टि करके सदस्यों में इसलोगों की भावना को प्रोत्साहन देता है।

III नई आवश्यकताओं का निर्माण :-

व्यक्ति की आवश्यकता न तो सीमित होती है और न स्थिर। जब व्यक्ति अपनी खास आवश्यकताओं की पूर्ति के लिए समूह का सदस्य बनता है तो कुछ नये आवश्यकता भी पैदा हो जाती है। नई आवश्यकताओं का निर्माण करते रहना समूह के संबंधों के बारे में जानना आवश्यक है। जैसे आफॅसिरो का समूह, धार्मिक संगठन मजदूरो का समूह, मंत्रियो का समूह, दुकानदारो का समूह आदि को आपसी संबंधों के बारे में सही-सही ज्ञान के लिए विभिन्न सामाजिक समूहो के बीच का संबंध अर्थात राज्य की सत्ता को ठीक ढंग से समझना होगा।

-: समूह के कार्य का वर्णन :- समूह का अस्तित्व बना रहता है। साथ ही उसका कार्य क्षेत्र विकसित हो जाता है। जैसे

एक राजनीतिक पार्टी का निर्माण करते हैं तो उस पार्टी का विकास होने के लिए नयी-नयी आवश्यकताएँ उत्पन्न हो जाती है। उदाहरणस्वरूप संगठन की सदस्यता बनाना संगठन को आकर्षक एवं लोकप्रिय बनाना।

IV व्यक्ति का समाजीकरण :-

संगठन द्वारा व्यक्ति का समाजीकरण भी होता है विभिन्न सामाजिक संगठनों जैसे परिवार, खेल का संगठन, कालेज, धार्मिक संगठन, राजनीतिक संगठन आदि का योगदान प्रत्यक्ष या अप्रत्यक्ष रूप से व्यक्ति का समाजीकरण करने पड़ता है। जब कोई व्यक्ति अच्छे सामाजिक संगठन का सदस्य बनता है तो वह अपने सामाजिक व्यवहार को उनके अनुसार परिवर्तित करता है। परन्तु यदि व्यक्ति किसी बुरे सामाजिक संगठन जैसे चोर-डकैत तथा बदमाशों के संगठन का सदस्य किसी कारण से बन जाता है तो असामाजिक व्यवहार को अधिक सीखता है।

V सांस्कृतिक निरंतरता को बनाए रखना :-

प्रत्येक संगठन की अपनी कुछ विशेषताएँ, मूल्य, परम्पराएँ प्रथाएँ आदि होती है जिनपर संगठन का मुहर लगा होता है। एक संगठन जितने समय तक इन मूल्यों प्रथाओं एवं आकर्षणों को बनाए रखता है उतने समय तक सांस्कृतिक निरंतरता भी बनी रहती है। इस तरह से संगठन सांस्कृतिक निरंतरता को बनाए रखने में मदद करता है।

इस तरह स्पष्ट हुआ कि संगठन अपने सदस्यों के लिए अनेक प्रकार के कार्य करता है। इन कार्यों को करने से संगठन का अस्तित्व एवं सदस्य की गरिमा बनी रहती है।

REDMI NOTE 8
AI QUAD CAMERA